फरीदाबाद
मजदूर समाचार
अनुभवों तथा विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

व्हाट्सएप के जरिये भी अपनी बातें हम तक पहुँचा कर चर्चा का दायरा बढायें। मजदूर समाचार फोन पर पायें और अपने ग्रुपों में भेज कर आदान-प्रदान बढायें। हमारे इस नम्बर पर व्हाट्सएप मैसेज भेजें : 9643246782

नई सीरीज नम्बर 360 जून 2018

अनन्त है यह कम का जाल

कम्पनी का वकील खुद बोल रहा था कि इस शिकायत का कोई जवाब ही नहीं बनता। वो ये भी कह रहा था कि अगर कोई कम्पलेन्ट करता है कि निकाल दिया और पैसे नहीं दिये तो क्या जवाब लिखो ?

कौनसी शिकायतों के बारे में बात कर रहा था वो ?

श्रम विभाग में जो इक्की-दुक्की कम्पलेन्ट आती हैं और जिन पर कम्पनियों से लेबर डिपार्टमेन्ट जवाब माँगता है।

ज्यादातर वरकर के लिये तो यह क्लीयर है कि श्रम विभाग से कोई राहत नहीं मिलती। अपने कार्यस्थल पर ही निपटाना होता है। छोटे या बड़े ग्रुप में सहकर्मियों के साथ कदम उठाने पड़ते हैं।

अगर कोई अकेला पड़ जाये तो खुद का लिखा हुआ श्रम विभाग को एक लैटर भी काम कर जाता है।

तो आप कह रहे हो कि कम्पलेन्ट भी कभी सीढी का डण्डा बन जाते हैं।

हाँ, शिकायतों को भी डगों से नाप सकते हो।

यह आप दिलचस्प बात कर रहे हो। मैं कम्पलेन्ट को नकारात्मक ही सोचती हूँ। मेरी समझ रही है कि शिकायत हमारे बीच एयर कूलर का काम करती है। गर्मी की ताप में एक ठण्डक पहुँचाती है।

तो इसमें नकारात्मक क्या है ?

मेरे ख्याल से बात गर्म और ठण्डक के बीच घूमती रहती है। कदम नहीं रहती। स्टैप उठाने की बात आई तो कोई दूसरा उठाये। कोई दूसरा कर दे। और यह काफी व्यापक है। इसलिये कम्पलेन्ट नेगेटिव लगता है। इसलिये मुझे आपकी बात रोचक लगी।

आपकी बात काफी हद तक शायद ठीक है। अनुमान ठीक ही है। लेकिन मेरा पढना कुछ और भी कहता है।

हम कई लोगों के बीच में शिकायतों को ले कर बहस चल रही है। इसकी कभी-कभी इस अखबार में भी झलक दिख रही है। हम में से कुछ साथियों का तो यहाँ तक कहना है कि यह व्यवस्था बैठी ही कम्पलेन्टों पर है।

टकरावों का मेरा पढना यह है कि शिकायतों में फर्क करने पड़ेंगे। कुछ शिकायतें कदम तो खोलती हैं लेकिन वो एक व्यक्ति तक सीमित रह जाती हैं। जैसे निकाले जाने के बाद किसी वरकर ने श्रम विभाग में कम्पलेन्ट की कम्पनी की तरह-तरह की गैरकानूनी हरकतों की। श्रम विभाग ने समन भेजा और कुछ तारीखों तथा वार्ताओं के बाद जुर्माने की एक रकम हवा में आ जाती है। समझौते के लिये कम्पनी कोई रकम वरकर के सामने रखती है। ऐसे में अपने दबाव डालने की क्षमता, दबाव बढाने की क्षमता, और कितने दिन दबाव को टिका कर रख सकते हो की वरकर की अपनी रीडिंग उसको दिशा देती है।

इसमें अपने तन और मन को टिकाये रखने की क्षमता का आंकलन भी महत्वपूर्ण है।

सहमत हूँ। और सभी अपने-अपने ढँग से इन क्षमताओं को टटोलते रहते हैं, परखते रहते हैं। अगर खासतौर से देखें तो यह क्षमतायें अपने में दिखती हैं लेकिन दूसरों की यह क्षमतायें ओझल रहती हैं।

या किसी लीडर में यह क्षमतायें ढूँढ ली जाती हैं।

यह ठीक है। लेकिन मेरा कहना कुछ और भी था। सब के अपने-अपने पैमाने तथा स्तर की एक उम्मीद होती है, एक प्रतीक्षा होती है, और एक प्रत्याशा होती है। यह हमारी निजी और सामुहिक क्रियाओं-कदमों को हर समय लपेटे रहती हैं।

तो आपका कहना है कि हम जब शिकायत की भाषा सुनते हैं अथवा बोलते हैं तो उसमें अपने और एक सामुहिक पैमाने की गुणवत्ता पर आलोचना या निराशा होती है। जैसे मैं सोच रही थी कि मेरे कदम उठाते ही 40 जुड़ जायेंगे लेकिन जुड़े 15 ही। इस पर एक निराशा, गुस्सा, और शिकायत की भाषा। आप इसी का संकेत कर रहे हो क्या ?

नहीं। जो 15 जुड़े और एक अवधि में संक्रमिक बने उसे नहीं समझ पाना। कम देखना। अथवा उस अवधि को अपने पैमाने की प्रत्याशा पर गौण देखना। सब कम पड़ जाता है। पन्द्रह, पाँच सौ, हजार, चार हजार, एक लाख दिखते हैं और फिर कम पड़ जाते हैं। अनन्त है यह कम का जाल।

कभी-कभी इस बेमेल पर हम एक-दूसरे पर हँसते हैं। पैमाने निर्णायक बन जाते हैं और स्टैप्स महत्व खो देते हैं। यही सबसे घातक लगता है मुझे। और इसीलिये कम्पलेन्ट की भाषा बहुत परेशान करती है मुझे।

परेशान मत हो। शिकायत की भाषा तो एक किस्म का झाग है। भाषा की गाद है जो तैर रही है। किसके ऊपर ?

परस्पर में चेतना के अस्तित्व और आकृति पर।

फिर से शुरू करते हैं।

कम्पलेन्ट की भाषा को जाने दो

✶ **महारानी ऑफ इण्डिया** कम्पनी ने 368 उद्योग विहार फेज-3, गुड़गाँव वाली फैक्ट्री वर्ष-भर पहले बन्द कर दी। करीब 450 मजदूर थे और किसी को फण्ड के पैसे नहीं मिले हैं। कम्पनी की 417 उद्योग विहार फैक्ट्री चल रही है और वहाँ फण्ड निकालने का फार्म भरने में कई महीने लगा देते हैं। और, यह-वह कमी बता कर पी एफ ऑफिस वालों ने तीन बार जाने पर भी एक वरकर का फार्म जमा नहीं किया।

✶ **आकृति प्रिन्टर्स** (272 सैक्टर-7, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखी महिला मजदूरों की तनखा 7000 रुपये तथा पुरुषों की 7500 रुपये, और दोनों की ही ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं। चार मंजिला फैक्ट्री में पीने का पानी और टायलेट नीचे की मंजिल में हैं। पानी-पेशाब के लिये सीढियाँ उतरना-चढना और लाइन में लगना।

✶ **डी एस बुहीन** (88 सैक्टर-24, फरीदाबाद) फैक्ट्री में 45 मजदूरों की ई एस आई तथा पी एफ हैं और तनखा बैंक में। पावर प्रैस चलाते 25 वरकर तीन वर्ष से दैनिक दिहाड़ी पर हैं, 12 घण्टे बाद नकद पैसे, ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं — एक्सीडेन्ट होने पर कम्पनी सूर्या अस्पताल ले जाती है। दो वर्ष से दो ठेकेदार कम्पनी दिखाई नहीं दी हैं और कम्पनी 100 मजदूरों को नकद पेमेन्ट करती है — हैल्पर की तनखा 6800 रुपये और पावर प्रैस ऑपरेटर की 8000 रुपये। इन 100 की अब ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं — एक्सीडेन्ट होने पर मैनेजमेन्ट कहती है ठेकेदार के पास जाओ और ठेकेदार कहते हैं मैनेजमेन्ट के पास जाओ। इन 100 में 40 महिला मजदूर हैं जिनमें से आधी पावर प्रैस चलाती हैं। तनखा हर महीने देरी से — वरकर हँगामा करते हैं तब 25-26 तारीख को देते हैं।

✶ **जय ऑटो** (4 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 300 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में। सब वरकर टेम्परेरी हैं। स्टाफ के 30 लोग ही परमानेन्ट हैं। नाइट में टी-ब्रेक से लौटने में दो-तीन मिनट देरी पर 28 मई को रात 2 बजे एक वरकर को फैक्ट्री से निकाल दिया।

✶ **किरण उद्योग** (20 ए ढाण्ढा कॉम्पलैक्स, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फरीदाबाद) फैक्ट्री में महिला और पुरुष वरकर 10 टन से 100 टन की 19 पावर प्रैस चलाते हैं। ई एस आई नहीं। पी एफ नहीं। हैल्परों की तनखा 6800 रुपये और ऑपरेटरों की 8000-9000 रुपये।

✶ 24 **सेक्युरिटी सर्विस** (कार्यालय डुण्डाहेड़ा, गुड़गाँव) गार्ड को प्रतिदिन 12 घण्टे ड्युटी पर 30-31 दिन के 11 हजार रुपये देती है — ई एस आई तथा पी एफ राशि काट कर।

✶ **इण्डो ऑटोटेक** (132-33 सैक्टर-8, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री वरकर ने मई अंक की सामग्री पर एतराज जताते हुये कहा कि फैक्ट्री में सब मजदूर टेम्परेरी हैं। दो वर्ष पहले यूनियन के चक्कर में 10 वरकर जो यूनियन पदाधिकारी बनाये वो कम्पनी ने निकाल दिये थे और अब वो नहीं मिलते। इधर 8 महीने से यूनियन के चक्कर में 600 मजदूर फैक्ट्री के बाहर हैं और अब चण्डीगढ में तारीखें पड़ रही हैं। फैक्ट्री में 1200 वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम कर रहे हैं, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।

✶ **निधि ऑटो** (10 सैक्टर-24, फरीदाबाद) फैक्ट्री में यामाहा बाइक के पुर्जे 150 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में बनाते हैं। ओवर टाइम के पैसे मात्र, मात्र 17 रुपये प्रति घण्टा। पावर प्रैसों पर हाथ कटते रहते हैं। साल-भर पहले सजा के तौर पर 3 परमानेन्ट मजदूरों का धारूहेड़ा तथा नोएडा ट्रान्सफर करने लगे तो 11 परमानेन्टों ने 4 दिन काम बन्द किया, 14 पावर प्रैस बन्द रही थी।

✶ **ऑटोफिट** (40-41 सैक्टर-4, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में दो-चार मजदूर ही परमानेन्ट हैं और 300 टेम्परेरी वरकर हैं। ओवर टाइम की बजाय इन्सेन्टिव है। व्हील असेम्बली वाला बहुत मेहनत का काम है और टारगेट 8 घण्टे में 936 का है, उससे ज्यादा पर 25 पैसे प्रति पीस देते हैं। लेकिन महीने में 4500 रुपये इन्सेन्टिव के बने तो देते 2500 रुपये ही हैं।

✶ **बोनी पोलीमर** (37 पी सैक्टर-6, फरीदाबाद) फैक्ट्री में अप्रैल में मशीनों पर 12-12 घण्टे की जगह 8-8 घण्टे की शिफ्ट की तो मजदूरों ने एतराज किया हालाँकि ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से ही थे। कारण? परमानेन्ट ऑपरेटरों की तनखा भी बहुत कम है, 12-13 हजार रुपये — फैक्ट्री में दस वर्ष से काम कर रहे मजदूरों की ई एस आई तथा पी एफ 2010 में लागू की गई थी। कम्पनी ने मशीनों पर काम करते 180 परमानेन्ट और 200 टेम्परेरी वरकरों को धमकाने के लिये 10 बाउन्सर मई में 3 लाख रुपये महीना पर रखे हैं। पैकिंग में 12 घण्टे की शिफ्ट जारी है और इधर 50 महिला मजदूर 10 घण्टे रोज ड्युटी के लिये भर्ती की गई हैं।

✶ **रूप ऑटो** (439-40 सैक्टर-8, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 10 परमानेन्ट और 700 टेम्परेरी वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में। ओवर टाइम 52 रुपये प्रति घण्टा। कैन्टीन में भोजन बहुत खराब।

✶ **ओसवाल कास्टिंग** (48-49 इन्डस्ट्रीयल एरिया, फरीदाबाद) फैक्ट्री में 700 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में। ओवर टाइम सिंगल रेट से भी कम, 32-35-40 रुपये प्रति घण्टा। साप्ताहिक अवकाश के दिन काम के बदले में छुट्टी देने की कहते हैं पर दिसम्बर की ऐसी छुट्टी मई तक नहीं दी है। और इधर 27 मई तक प्रतिदिन ड्युटी, सप्ताह में शिफ्ट बदलती है पर नहीं बदली, नाइट वाले लगातार नाइट में 12 घण्टे।

✶ **डिजिटल सर्किट** (143 सैक्टर-4, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में साढे दस घण्टे की शिफ्ट है लेकिन ओवर टाइम एक घण्टे का ही देते हैं और वह भी सिंगल रेट से। तनखा हर महीने देरी से और वह भी मजदूर काम बन्द कर देते हैं तब देते हैं। तनखा से ई एस आई तथा पी एफ राशि काटते हैं पर पी एफ नम्बर नहीं बताते। छोड़ने अथवा निकालने पर फण्ड के पैसे निकालने का फार्म भरते ही नहीं।

✶ **ब्लोवेल ऑटो** (27 सैक्टर-6, फरीदाबाद) फैक्ट्री में 250 टेम्परेरी वरकरों को 12 घण्टे रोज ड्युटी पर 26 दिन के 10,800 रुपये और इन्हीं में से ई एस आई तथा पी एफ काटते हैं। होण्डा वाले 29 मई को फैक्ट्री आये तब स्टाफ वाले 15 को कम्पनी ने वर्दी दी।

✶ **सन्धार कम्पानेन्ट्स** (24-25 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 300 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में। ओवर टाइम सिंगल रेट से, 40 रुपये प्रति घण्टा। स्टाफ के 100 लोग हैं और अधिकतर दिन ड्युटी में। फैक्ट्री कैन्टीन में मजदूरों और स्टाफ के लिये दो किस्म का भोजन रहता है।

✶ **रागा इंजीनियर्स** (30/2 इन्डस्ट्रीयल एरिया, फरीदाबाद) फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 9 की ड्युटी है पर महीने में 15 नाइट लगती हैं। साँय 7 बजे गेट पास दे देते हैं जब नाइट लगती है। फिर रात 9 बजे से सुबह 7 बजे तक काम। दो घण्टे रैस्ट के बाद फिर सुबह 9 बजे से ड्युटी। रविवार को भी ड्युटी। महीने में 200-250 घण्टे ओवर टाइम, पैसे सिंगल रेट से। और, भर्ती के समय ऑपरेटर को तनखा 15 हजार रुपये बताना लेकिन ई एस आई तथा पी एफ के दोनों हिस्से वरकर की तनखा से काट कर 12 हजार रुपये देना। ✶ **वीएक्सेस** (12 सैक्टर-4, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 200 वरकर दिन में 11, 12, 14 घण्टे की शिफ्ट में और रात को 50 मजदूर 12 घण्टे की शिफ्ट में। ओवर टाइम सिंगल रेट से।

हरियाणा सरकार द्वारा 1 जनवरी 2018 से निर्धारित न्यूनतम वेतन :

अकुशल श्रमिक	8498 रुपये मासिक	(8 घण्टे के 327 रुपये)
अर्ध-कुशल अ	8922 रुपये मासिक	(8 घण्टे के 343 रुपये)
अर्ध-कुशल ब	9369 रुपये मासिक	(8 घण्टे के 360 रुपये)
कुशल अ	9837 रुपये मासिक	(8 घण्टे के 378 रुपये)
कुशल ब	10,329 रुपये मासिक	(8 घण्टे के 397 रुपये)
उच्च कुशल श्रमिक	10,845 रुपये मासिक	(8 घण्टे के 417 रुपये)
गार्ड	8922 रुपये मासिक	(8 घण्टे के 343 रुपये)
शस्त्रधारी गार्ड	10,329 रुपये मासिक	(8 घण्टे के 397 रुपये)
सफाईकर्मी	9057 रुपये मासिक	(8 घण्टे के 348 रुपये)

घोषणा 15 मई को की गई इसलिये 4 महीने का डी ए एरियर है।

दिल्ली में न्यूनतम वेतन

कथनी :— दिल्ली सरकार द्वारा 3 मार्च 2017 से नया ग्रेड लागू और 1 अप्रैल 2018 से दिल्ली में न्यूनतम वेतन :

अकुशल श्रमिक — 13, 896 रुपये (8 घण्टे के 534 रुपये)

अर्ध-कुशल श्रमिक —15,296 रुपये (8 घण्टे के 588 रुपये)

कुशल श्रमिक — 16,858 रुपये (8 घण्टे के 648 रुपये)

और करनी : —

दिल्ली जल बोर्ड सीवर सफाई वरकर : तुगलकाबाद, दक्षिणपुरी, चिराग दिल्ली में सीवर सफाई मजदूरों की तनखा 9000 रुपये। ई एस आई नहीं। पी एफ नहीं। और जगह भी यही बात। पूरी दिल्ली में दिल्ली जल बोर्ड के सीवर सफाई मजदूरों की तनखा 9000 रुपये। और दिल्ली जल बोर्ड का चेयरमैन मुख्य मन्त्री है।

अनसुन मल्टीटेक (बी-123 ओखला फेज-1) फैक्ट्री में 25-30 वर्ष से काम कर रहे 200 मजदूरों को ई एस आई तथा पी एफ राशि काट कर 12 घण्टे रोज ड्युटी पर 26 दिन के 13000-14000 रुपये। तथा, 250 वरकरों की ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं, और 12 घण्टे रोज ड्युटी पर 26 दिन के 9000 रुपये।

सरवेल (डी-6/1 ओखला फेज-2) फैक्ट्री में 20-30 वर्ष से काम कर रहे 45 परमानेन्ट मजदूरों में हैल्परों की तनखा 9700 रुपये और ऑपरेटरों की 11-12-14-15 हजार रुपये। फैक्ट्री को नीमराना (राजस्थान) ले जाने का नोटिस 4 मई को कम्पनी ने लगाया। मजदूरों द्वारा विरोध, श्रम विभाग में तारीखें पड़ रही हैं। **स्मार्ट सेक्युरिटी सर्विस** (मुख्यालय गोविन्दपुरी, दिल्ली) गार्ड को 12 घण्टे प्रतिदिन ड्युटी पर 30-31 दिन के दस हजार रुपये देती है। **उमा शंकर खण्डेलवाल एण्ड कम्पनी** (ई-30 ओखला फेज-2) फोरजिंग फैक्ट्री में हैल्परों को 12 घण्टे रोज ड्युटी पर 26 दिन के 15,000 रुपये। पुराने इलेक्ट्रिशियन, हैमर मैन, स्टाफ को 8 घण्टे ड्युटी पर 26 दिन के 15,000 रुपये। **अपोलो फार्मेसी** की दिल्ली में 200 से ज्यादा दवाई की दुकानों पर काम करते एक हजार से अधिक वरकरों की तनखा 9500 रुपये। **महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा** (बी-24 ओखला फेज-1) वर्कशॉप में 30 हैल्परों की ई एस आई नहीं , पी एफ नहीं और तनखा 7500 रुपये। कारीगरों की तनखा 10-12 हजार रुपये। महिन्द्रा की ए-40 और बी-1/10 मोहन को-ऑपरेटिव वाली वर्कशॉपों में भी यही सब।

थॉमसन प्रैस (बी-315 ओखला फेज-1) में नया ग्रेड लागू नहीं।

युवा वरकर : तुगलकाबाद में 7500 रुपये तनखा में काम करता था पर जगह दूर थी। इधर ओखला फेज-2 में प्रिन्टिंग प्रैस में 7000 रुपये तनखा में लगा हूँ। **एस के बेरी एण्ड सन्स** (ए-119 ओखला फेज-2) फैक्ट्री में नया ग्रेड लागू नहीं। **एयरटेक इलेक्ट्रोविजन** (बी-70 ओखला फेज-2) फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 8000 रुपये। **क्रियेटिव चेन स्टोर** (सी-55 ओखला फेज-2) फैक्ट्री में 250 वरकरों को नया ग्रेड नहीं।

स्विफ्ट सेक्युरिटी सर्विस दिल्ली में 12 घण्टे प्रतिदिन ड्युटी पर 30-31 दिन के गार्ड को कहीं 12-13 हजार तो कहीं 19 हजार रुपये देती है — ई एस आई तथा पी एफ राशि काट कर। **माया एक्सपोर्ट** (बी-127 ओखला फेज-1) फैक्ट्री में नया ग्रेड नहीं दे रहे और काम नोएडा शिफ्ट कर रहे हैं। **कनिका एक्सपोर्ट** (ए-186 तथा ए-190 ओखला फेज-1) फैक्ट्रियों में कारीगर को साढे आठ घण्टे के 485 रुपये। **एन जी ग्लोवर** (एक्स-57 ओखला फेज-2) फैक्ट्री में 12 घण्टे रोज ड्युटी पर 26 दिन के हैल्परों को 9000 रुपये और कारीगरों को 15,750 रुपये। अप्रैल की तनखा 31 मई तक नहीं दी थी।

स्टर्लिंग सेक्युरिटी सर्विस (कार्यालय साकेत, दिल्ली) गार्ड को प्रतिदिन 12 घण्टे ड्युटी पर 30-31 दिन के 10,179 रुपये और गनमैन को 13,000 रुपये देती है — ई एस आई तथा पी एफ राशि काट कर। **पायल सेक्युरिटी सर्विस** (बी-86 ओखला फेज-2) गार्ड को 12 घण्टे रोज ड्युटी पर 30-31 दिन के 8,337 रुपये देती है — ई एस आई तथा पी एफ राशि काट कर। **परफैक्ट विजन सेक्युरिटी सर्विस** (एफ-7 ओखला फेज-1) गार्ड को प्रतिदिन 12 घण्टे ड्युटी पर 30-31 दिन के 10,000 रुपये ई एस आई तथा पी एफ राशि काट कर देती है। परफैक्ट कम्पनी ज्यादा हाउसकीपिंग वरकर सप्लाई करती है और इनमें अधिकतर मजदूरों को 8 घण्टे ड्युटी पर 26 दिन के 8000 रुपये देती है, कुछ को 13,000 रुपये।

अजय एयर प्रोडक्ट (बी-283 ओखला फेज-1) में वरकरों से 15-16 हजार रुपये पर दस्तखत करवाते हैं और देते 7000-8000 रुपये हैं।

वीयरवेल (बी-134 ओखला फेज-1) फैक्ट्री वरकरों ने नया ग्रेड लागू करवाने के लिये अनेक कदम उठाये हैं पर कम्पनी पुराना ग्रेड ही दे रही है। इधर 23 मई को रात 9 बजे तक काम करने के बाद 24 को सुबह मजदूर फैक्ट्री पहुँचे तो गेट पर पुलिस लगी थी। नोएडा ट्रान्सफर का नोटिस। बड़ी सँख्या में वरकर 29 मई को वीयरवेल की नोएडा फैक्ट्री पहुँचे। अन्दर से ताला लगा कर कम्पनी ने पुलिस बुला ली। पुलिस ने समझौता करवाया : 30 मई को कम्पनी ओखला फैक्ट्री में नोटिस लगा देगी कि क्या दे रही है। और 30 मई को रात 8 बजे तक कम्पनी ने कोई नोटिस नहीं लगाया था। **ओरियन्ट क्राफ्ट** (बी-16 ओखला फेज-2) फैक्ट्री में 8 घण्टे की बजाय 10 घण्टे के कारीगर को 633 रुपये। **साहनी ग्लोबल** (बी-144 ओखला फेज-1) फैक्ट्री में नया ग्रेड नहीं। **भैरव इम्ब्राइड्री** (सी-16 ओखला फेज-1) फैक्ट्री में 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के हैल्परों को 6000-7000-7500 रुपये और कारीगरों को 10-12 हजार रुपये। **रेड ओरेन्ज** (डी एस आई डी सी शेड 21-22 ओखला फेज-2) फैक्ट्री में प्रतिदिन 10 घण्टे ड्युटी पर 26 दिन के हैल्पर को 6000 रुपये और टेलर को 9000-10,000 रुपये। ढाई सौ मजदूरों में एक की भी ई एस आई तथा पी एफ नहीं हैं। **फ्लीट इण्डिया** (डी-50 ओखला फेज-1) फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 7200 रुपये और पावर प्रैस ऑपरेटरों की 9700 रुपये।

सोनू एग्जिम (बी-5/3 ओखला फेज-2) फैक्ट्री में नया ग्रेड लागू नहीं करने पर मजदूरों ने 23 मई को फिर चक्का जाम किया। इस बार सैम्पलिंग टेलरों और इम्ब्राइड्री वरकरों के साथ फिनिशिंग वरकर भी चक्का जाम में शामिल हुये। मजदूरों को धमकाने के लिये कम्पनी ने एक दादा और पुलिस का सहारा लिया है। चक्का जाम से कम्पनी की नोएडा फैक्ट्रियों में उत्पादन प्रभावित। कम्पनी ने 31 मई को 4 मजदूर गिरफ्तार करवाये। सोनू एग्जिम फैक्ट्री से सब वरकर ओखला थाने पर पहुँच गये।

शमा इन्टरनेशनल (सी-119 ओखला फेज-1) फैक्ट्री में नया ग्रेड लागू नहीं। **कुमार ऑटोमोबाइल्स** (बी-281 ओखला फेज-1) में पुराना ग्रेड ही जारी है।

साझेदारी

✶ आई एम टी मानेसर, उद्योग विहार गुड़गाँव, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, नोएडा, फरीदाबाद में मजदूर समाचार का वितरण हर महीने होता है।

✶ मजदूर समाचार के वितरण के दौरान फुरसत से बातचीत मुश्किल रहती है। इसलिये मिलने-बातचीत के लिये पहले ही सूचना देने का सिलसिला आरम्भ किया है। चाहें तो अपनी बातें लिख कर ला सकते हैं, चाहें तो समय निकाल कर बात कर सकते हैं, चाहें तो दोनों कर सकते हैं।

— शुक्रवार, 29 जून को सुबह 6 बजे से 9½ तक आई एम टी मानेसर में सैक्टर-3 में बिजली सब-स्टेशन के पास मिलेंगे। खोह गाँव की तरफ से आई एम टी में प्रवेश करते ही यह स्थान है। जे एन एस फैक्ट्री पर कट वाला रोड़ वहाँ गया है।

— उद्योग विहार, गुड़गाँव में फेज -1 में पीर बाबा रोड़ पर वोडाफोन बिल्डिंग के पास वीरवार, 28 जून को सुबह 7 से 10 बजे तक बातचीत के लिये रहेंगे। यह जगह पेड़ के नीचे चाय की दुकान के सामने है।

— शनिवार, 30 जून को सुबह 7 से 10 बजे तक चर्चा के लिये ओखला-सरिता विहार रेलवे क्रॉसिंग (साइडिंग) पर उपलब्ध रहेंगे।

✶ फरीदाबाद में जून में हर रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल पावर हाउस होते हुए रास्ता है। ऑटोपिन झुग्गियाँ पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी पर हैं।

फोन तथा व्हाट्सएप के लिये नम्बर : 9643246782

ई-मेल < majdoorsamachartalmel@gmail.com >

थक चुकी हैं थकाने वाली राहें, ओमैक्स ऑटो

प्लॉट 6 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर स्थित ओमैक्स ऑटो फैक्ट्री के वरकर 28 मई को सुबह ड्युटी के लिये पहुँचे तो गेट पर पुलिस और नोटिस : 190 परमानेन्ट मजदूरों की नौकरी समाप्त।

1983 में स्थापित ओमैक्स ऑटो कम्पनी की आज भारत-भर में 9 फैक्ट्रियाँ हैं। कम्पनी की बिनौला फैक्ट्री से 300 परमानेन्ट मजदूरों की नौकरी 11 महीने पहले समाप्त कर उत्पादन बन्द (रेलवे डिविजन में काम जारी)। कम्पनी की धारूहेड़ा फैक्ट्री में 7 महीने पहले नये यूनियन लीडर और करीब 300 परमानेन्ट मजदूरों की नौकरी समाप्त कर दी गई। पुराने यूनियन लीडर सस्पैण्ड हैं और जो 30-40 परमानेन्ट मजदूर फैक्ट्री में जाते रहे थे उन्हें एक महीने पहले हिसाब दे दिया। धारूहेड़ा फैक्ट्री में ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे मजदूरों और 6 महीने वाले कैजुअल वरकरों द्वारा उत्पादन जारी है।

इधर 23 मार्च को कम्पनी ने आई एम टी मानेसर फैक्ट्री बन्द करने और मजदूरों की नौकरी समाप्त करने का आवेदन श्रम विभाग में दिया। यूनियन ने विरोध किया। गुड़गाँव से मामला चण्डीगढ भेज दिया गया। श्रम आयुक्त ने मजदूरों को कम्पनी की अन्य फैक्ट्रियों में भेजने की बात की। शनिवार, 26 मई को राज्यपाल का पत्र यूनियन को मिला जिसमें फैक्ट्री चलाने तथा 6 महीने में श्रम विभाग, गुड़गाँव में समझौता करने को कहा था.....

इन दो वर्षों में मजदूर समाचार में छपी ओमैक्स ऑटो मानेसर फैक्ट्री की बातें संक्षेप में: हीरो बाइक के बॉडी फ्रेम बनाते मजदूरों में से 900 को ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखा गया था। इन 900 वरकरों ने फरवरी 2016 में मिल कर कदम उठाये थे। वर्षों से काम कर रहे जिन 175 को कम्पनी कैजुअल कहती थी वो कानून अनुसार परमानेन्ट मजदूर थे पर यूनियन ने उन्हें सदस्य नहीं बनाया। मैनेजमेन्ट से समझौते करने के समय दबाव डालने के लिये इन 900 तथा 175 वरकरों का इस्तेमाल यूनियन करती रही। नवम्बर 2016 में 12-12 घण्टे की जगह फैक्ट्री में 8-8 घण्टे की दो शिफ्ट और वैल्ड शॉप से 50 टेम्परेरी वरकर निकाले गये। फरवरी 2017 से घाटे की बात मैनेजमेन्ट करने लगी। टेम्परेरी वरकरों के पी एफ में गड़बड़ी। दिवाली 2017 से स्टाफ वाले फलाँ तारीख को 175 को निकालने की बातें करने लगे थे। और 1 मार्च 2018 को नोटिस लगा कर उन 175 को निकाला तब यूनियन चुप रही। फिर 28 मई को यूनियन सदस्यों की नौकरी समाप्त।

ईस्टर्न मेडिकिट कम्पनी मजदूरों के अनुभवों पर ओमैक्स ऑटो वरकरों द्वारा, सब मजदूरों द्वारा विचार करना बनता है। गुड़गाँव में ईस्टर्न मेडिकिट की पाँच फैक्ट्रियाँ थी। तीन हजार कैजुअल वरकर 12-12 घण्टे की शिफ्टों में काम करते थे, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से, और तनखा देरी से — पैसों के लिये वरकर काम बन्द करते तब कम्पनी पुलिस बुला लेती थी। परमानेन्ट 1100 मजदूरों की यूनियन, 8-8 घण्टे की ड्युटी, तनखा समय पर। कैजुअलों को ओवर टाइम दुगुनी दर से की बात पर यूनियन लीडर बोले थे कि ऐसा करने पर कम्पनी बन्द हो जायेगी। ईस्टर्न मेडिकिट फैक्ट्रियों से 2011 में सब कैजुअल वरकर निकाल दिये गये। और परमानेन्ट मजदूरों पर कम्पनी ने चोटें बढाई। ईस्टर्न मेडिकिट फैक्ट्रियों से देहरादून में खोली **ग्लोबल मेडिकिट** नाम की फैक्ट्री में चीजें भेजी जाने लगी। परमानेन्ट मजदूरों ने इसका विरोध किया तो यूनियन लीडरों ने मैनेजमेन्ट द्वारा एक्शन का डर दिखा कर मजदूरों को रोका गया। तनखा में देरी, मजदूरों के नाम पर कम्पनी द्वारा ग्रामीण बैंक से लिये कर्ज की किश्तों का भुगतान रोकना, पी एफ जमा नहीं करना, बैंकों के करोड़ों रुपये कर्ज को लौटाने में आनाकानी,.... बिजली बिल के 60 लाख रुपये बकाया हो गये तब बिजली काट दी गई। कुछ दिन जनरेटर चलाये और मई 2012 से मैनेजमेन्ट ने ईस्टर्न मेडिकिट की फैक्ट्रियों में आना बन्द कर दिया। यूनियन ने श्रम विभाग में शिकायत की। तारीखें। यूनियन लीडर अफसर-मन्त्री से मिले। आश्वासन। धरना-प्रदर्शन किये। अन्य यूनियनों के लीडरों ने भाषणों में समर्थन किया। यूनियन कोर्ट-कचहरी गई। दिल्ली में ईस्टर्न मेडिकिट के चेयरमैन-मैनेजिंग डायरेक्टर के निवास पर धरना देने पहुँची यूनियन को पुलिस ने हटा दिया। वैसे, उस स्थान पर अब ग्लोबल मेडिकिट का मुख्यालय है।

ईस्टर्न मेडिकिट के 1100 परमानेन्ट मजदूरों में से एक ने इधर व्हाट्सएप पर लिखा है : "क्या बतायें श्रीमान, असमंजस में हैं। हमारे अपने कम्पनी के नेता 06 साल गुजरने के बाद एक अजीब कहानी हमारे समक्ष रख रहे हैं, उनका कहना है कि दिल्ली हाई कोर्ट ने जो हमारी कम्पनी सील कर रखी है, सबसे पहले हमें सीलिंग हटाने के लिये दिल्ली हाई कोर्ट में उस पार्टी को भुगतान करना होगा जिसकी वजह से कम्पनी सील हो रखी है। ये तर्क बड़ा ही अटपटा और भटकाने वाला लगता है।......"

फैक्ट्री बन्द होने पर भी मैनेजमेन्ट और यूनियन द्वारा पैसे बनाना आम बात है। फरीदाबाद में ऐसे बहुत उदाहरण हैं। मन गिरवी रखने वाले लोगों का होना बहुत दुख की बात है।

इसलिये ओमैक्स ऑटो वरकर हों चाहे अन्य किसी फैक्ट्री के मजदूर, यह ध्यान में रखना जरूरी है कि थकाने वाली राहें खुद थक चुकी हैं। श्रम विभाग में शिकायत, मन्त्री-अफसर को ज्ञापन, कोर्ट-कचहरी में केस, धरना-प्रदर्शन-भूख हड़ताल-मीटिंग, पर्चा-पोस्टर, तारीखों-भाषणों वाली खानापूर्तियों से खुद को धोखे में रखना नहीं बनता। नेताओं का नेताओं को, यूनियनों का यूनियनों को समर्थन और मजदूरों का मजदूरों को समर्थन बहुत अलग हैं। "देखो क्या होता है?" कहने की बजाय, "देख रखा है क्या होता है।" कहना बनता है।

मण्डी के समुद्र में कम्पनियाँ कागज की नाव होती हैं। और, हम समुद्री तूफानों के बढते जाने के दौर में हैं। आज कम्पनियों की दो ही कैटेगरी हैं :

1. बहुत कमजोर कम्पनी

2. बहुत-ही कमजोर कम्पनी

एक फैक्ट्री के मजदूरों का मामला हजारों फैक्ट्रियों के मजदूरों का मामला

हमारे सम्मुख औद्योगिक क्षेत्र में हजारों फैक्ट्रियाँ एक-दूसरे से सटी हैं। हमारे सामने एक-दूसरे को छूते औद्योगिक क्षेत्र हैं। दुनिया-भर में उत्पादन अधिकाधिक घनिष्ठता से जुड़ता जा रहा है। हम वैश्विक मजदूरों, ग्लोबल वेज वरकरों के युग में हैं। ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्था की जगह नई समाज रचना के इस जीवन्त समय में मजदूरों के बढते जोड़ और तालमेल निर्णायक लगते हैं। दैनिक जीवन में बढते जोड़ों की गति को बढाने के अवसर औद्योगिक क्षेत्रों में आते ही रहते हैं। इस-उस फैक्ट्री की दीवारें जब लड़खड़ाती हैं तब एक फैक्ट्री के मजदूरों के मामले को हजारों फैक्ट्रियों में मजदूरों का मामला बनाने की सम्भावना काफी बढ जाती है। और फिर, फैक्ट्री मैनेजमेन्ट-कम्पनियों की एसोसियेशन-इनकी सरकार से पार पाने के लिये मजदूरों का मजदूरों के पास जाना, मजदूरों का मजदूरों से तालमेल बढाना कारगर राह है। यह भी ध्यान में रखना आवश्यक है कि दीवारों के लड़खड़ाने के समय लीपने-पोतने में बिचौलिये अति सक्रिय हो जाते हैं और नेताओं का नेताओं को समर्थन बहुत बढ जाता है।

सोचने-विचारने और करने की धुरी: मजदूरों के बीच जोड़-तालमेल बढाना।

ओमैक्स ऑटो मजदूरों के पास अब भी समय है, क्षमता है अपने मामले को आई एम टी मानेसर की हजारों फैक्ट्रियों के मजदूरों का मामला बनाने की। लेकिन खुद थक चुकी थकाने वाली राहों पर ही रहे तो ईस्टर्न मेडिकिट का उदाहरण सामने है।

और हाँ, कम्पनी किसी की सगी नहीं होती।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया। RN 42233
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।